A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हिमाचल प्रदेश की जनजातियों के पारंपरिक लोकवाद्यों का अध्ययन:'स्पीति जनपद' के विशेष संदर्भ में

Yashwant[1], Dr. Lata[2]

1 Ph.D. Research Scholar, Performing Arts of Music, Lovely Professional University, Phagwara, Punjab1
2 Assistant Professor, Performing Arts of Music, Lovely Professional University, Phagwara, Punjab2

OPEN ACCESS

सारांश

हिमाचल प्रदेश का स्पीति जनपद प्रदेष के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है। यह जनपद अपनी भौगोलिक दुर्गमता के बावजूद भी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का धनी जनपद है। इस जनपद की जनजातियाँ बोद्र' लामा' बेदा बेता और जौ जनजाति तिब्बती बौद्ध संस्कृति से गहनता से प्रभावित हैं। इन जनजातियों का सामाजिक जीवन लोक संगीत, धार्मिक परंपराएं संगीत से ओतप्रोत है। स्पीति की सांस्कृतिक संरचना में पारंपरिक लोकवाद्यों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्पीति के लोकवाद्य न केवल संगीत उत्पन्न करने का साधन हैं, बल्कि समुदाय की सामूहिक भावना, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक पहचान के भी संवाहक हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य स्पीति जनपद के पारंपरिक जनजातीय लोकवाद्यों का सांगीतिक और सांस्कृतिक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में प्रमुख लोकवाद्यों जैसे दमन' दाओ और वाद्य को शामिल किया गया है, जो कि धार्मिक अनुष्ठानों, उत्सवों त्योंहारों और लोकनृत्यों की प्रस्तुतियों में प्रयोग किए जाते हैं। षोध में स्पीति के पारंपरिक वाद्यों की बनावट, उन वाद्यों की वादन शैली एंव उनके प्रयोग की परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। शोध में गुणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग करते हुए क्षेत्रीय भ्रमण, प्रत्यक्ष अवलोकन और साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी संकलित की गई है' जिससे यह स्पष्ट होता है कि स्पीति के पारंपरिक लोकवाद्य जनजातीय समुदाय की जीवनशैली, धार्मिक परंपराओं और सामूहिक संस्कृति का महत्वपुर्ण अंग हैं। हालांकि, आधुनिक समय में आधुनिकता, तकनीकी साधनों के प्रभावों के कारण स्पीति की लोक परंपराएं एंव लोकवाद्य संकटग्रस्त होते जा रहे हैं' ऐसी परिस्थितियों में इन लोकवाद्यों का संरक्षण और अगली पीढ़ियों तक इन वाद्यों का स्थानांतरण अत्यंत आवश्यक है।

***मुख्यशब्द**: हिमाचल प्रदेष, बेदा जनजाति, स्पीति, लोकवाद्य, वादन विधि*

परिचय

हिमाचल प्रदेष विविधताओं से परिपूर्ण एक सांस्कृतिक राज्य है, इस राज्य के हर क्षेत्र की अपनी विशिष्ट लोक परंपराएँ, कला, लोकसंगीत एंव वाद्य परंपरा है। हिमाचल प्रदेष का लोकसंगीत यहां के लोगों के जीवन का महत्वपुर्ण हिस्सा है। हिमाचल प्रदेष को देव भूमि के नाम से भी जाना जाता है। हिमाचल प्रदेष में विभिन्न जातियों के अतिरिक्त जनजातियां भी निवास करती है' जो अपनी जनजातिय संस्कृति के प्रसिद्ध है। जिला लाहौल स्पीति प्रदेष का जनजातिय जिला है। यह जिला की न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह वहाँ की जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के लिए भी विष्व प्रसिद्ध है। स्पीति जनपद का जनजातीय समाज तिब्बतियन बौद्ध धर्म से प्रभावित है, स्पीति की लोक परंपराओं एंव लोकसंगीत में तिब्बती संस्कृति की गहरी छाप देखने को मिलती है। स्पीति की लोक परंपराओं में संगीत और विशेष रूप से लोक वाद्ययंत्रों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। हिमाचल प्रदेष की स्पीति घाटी में लामा' बेता बेदा' भोट और जौ जनजाति के लोग निवास करतें है। इन सभी जनजातियों का एक धर्म एंव संस्कृति है। ये जनजातियां तिब्बतियन बौद्र धर्म को मानती है। स्पीति घाटी के लोगों के द्वारा लोसर' नमकन इत्यादि त्योंहारों को बडी धुमधाम से मनाया जाता है। स्पीति जनपद के इन लोकप्रिय त्योंहारों में सभी जनजाति के लोग पारंपरिक पहनावे के साथ पुजा अर्चना' विभिन्न व्यंजनों को बनाते तथा लोकगीतों का गायन एंव नृत्य करतें है। स्पीति घाटी में तालबद्र संगीत प्रचलित है' यहां प्रत्येक उत्सव पर लोकगीतों के गायन के साथ लोक वाद्यों का वादन बेता' बेदा जनजाति के लोगों के द्वारा किया जाता है। बेता बेदा जनजाति स्पीति जनपद की एकमात्र ऐसी जनजाति है जिसका प्रमुख कार्य गायन वादन एंव नृत्य करना है। इस जनजाति के लोगों को वाद्य वादन एंव लोकगायन की विरासत इनके पुर्वजों से प्राप्त हुई है। बेता' बेदा जनजाति के लोगों ने संगीत को मौखिे रूप से अपने पुर्वजों से सिखा है। स्पीति के पारंपरिक लोकवाद्य केवल ध्वनि उत्पन्न करने वाले उपकरण नहीं हैं, बल्कि ये वाद्य जनजातीय समाज की धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पहचान के सजीव प्रतीक हैं। घाटी के लोकवाद्यों का वादन विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, पर्व-त्योहारों, विवाह समारोहों, पारंपरिक नाट्य प्रस्तुतियों और सामूहिक नृत्यों में किया जाता है। ये पारंपरिक लोकवाद्य जनजातिय संगीत का महत्वपुर्ण अंग है। दमन' दाओ और सुना आदि वाद्य स्पीति के

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

पारंपरिक लोकवाद्य है। इन वाद्यों का वादन स्पीति की सभी जनजातियों में एक समान रूप से किया जाता है। ये पारंपरिक लोकवाद्य न केवल संगीतात्मक सौंदर्य प्रदान करते हैं, बल्कि सामुदायिक भावनाओं को भी अभिव्यक्त करते हैं। स्पीति की कठोर जलवायु और भौगोलिक दुर्गमता के बावजूद भी वहाँ की जनजातियाँ अपनी सांस्कृतिक विरासत को आज भी जीवित रखने का प्रयास कर रही हैं। किंतु वैश्वीकरण, आधुनिक संगीत साधनों की बढ़ती लोकप्रियता, युवा पीढ़ी की बदलती रुचियों के कारण स्पीति के लोकवाद्य एंव संगीत धीरे-धीरे उपेक्षित होते जा रहे हैं। यह अध्ययन न केवल संगीत शास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह जनजातीय संस्कृति के संरक्षण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम भी है।

शोध पद्धति: इस षोध कार्य में गुणात्मक और वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया गया है, जो कि पारंपरिक लोकवाद्यों की सांगीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशेषताओं को समझने हेतु उपयुक्त सिद्ध होती हैं। अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। शोधकर्ता ने स्पीति क्षेत्र के विभिन्न गांवों विशेषतः काजा, ताबो, लांगजा और किब्बर कीह का प्रत्यक्ष क्षेत्रीय भ्रमण कर पारंपरिक वाद्य बजाने वाले लोक कलाकारों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार किए। द्वितीयक स्रोतों में शोध-पत्र, लोक साहित्य, सांस्कृतिक अभिलेख और सरकारी प्रकाशनों से प्राप्त जानकारी का अध्ययन किया जाऐगा।

शोध का क्षेत्र: यह शोध अध्ययन हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र स्पीति घाटी तक सीमित है। स्पीति जनपद भारत-तिब्बत सीमा के समीप स्थित है' यहाँ की जलवायु, संस्कृति और परंपराएँ अत्यंत विशिष्ट हैं। शोध का प्रमुख उदेष्य स्पीति की बौद्ध प्रभावित जनजातीय संस्कृति में प्रयुक्त पारंपरिक लोकवाद्य यंत्रों का अध्ययन करना है। शोध क्षेत्र में काजा, किब्बर, हिक्किम, लंगजा, ताबो, और कोमिक' कीह' लोसर जैसे प्रमुख गाँवों को सम्मिलित किया गया है, जहाँ पर लोकवाद्यों का वादन प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में आज भी पुराने समय की ही भांति किया जाता है।

स्पीति जनपद के पारंपरिक लोकवाद्य

देवभूमि हिमाचल प्रदेश जितना अपनी जातिय एंव जनजातिय संस्कृति के प्रसिद्ध है, उतना ही प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के लोग अपने मनोरंजनके साधनों में मुख्यतः लोक संगीत को प्राथमिकता देते हैं। हिमाचल प्रदेश का जनजातीय संगीत यहाँ पर निवासित जनजातिय लोगों के जीवन से मुख्य रूप से जुड़ा है। स्पीति घाटी के प्रत्येक क्षेत्रों में खुषी के अवसरों पर संगीत का आयोजन किया जाता है। जनजातीय लोक संगीत का संबंध स्थानीय क्षेत्र में गाए जाने वाले लोकगीतों, लोकनृत्य और लोकनाट्य से है। लोक संगीत से वहां के लोगों की संस्कृति पहनावा, रहन-सहन इत्यादि झलकता है। स्पीति घाटी में लोकगीतों के गायन के साथ लोकवाद्यों का वादन किया जाता है। इस जनजातिय क्षेत्र का संगीत बिना वाद्य वादन के अधुरा है।

भारतीय संगीत में वाद्यों को चार भागों तत' अवनद्व' घन और सूषिर क्षेणी में विभाजित किया गया है' यही विभाजन प्रत्येक राज्यों के लोकवाद्यों में भी देखा जा सकता है। स्पीति के पारंपरिक लोकवाद्यों का वर्गीकरण दो प्रमुख श्रेणियों अवनद्ध एंव सूषिर में किया गया है, जो कि भारतीय संगीत शास्त्र पर आधारित हैं। हिमाचल प्रदेष के स्पीति के लोकवाद्यों में अवनद्ध एंव सूषिर ही पाए जाते हैं।

अवनद्ध वाद्य वो वाद्य होतें हैं जिनमें चमड़े की झिल्ली लगी होती है और पीटकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है, जैसे दमन और दाओ, जो कि विशेषकर त्योहारों और धार्मिक आयोजनों में बजाए जाते हैं।

सूषिर वाद्य की क्षेणी में वो वाद्य आते हैं जिनको हवा फूंककर ध्वनि उत्पन्न की जाती है, जैसे सुना लोक वाद्य। यह वाद्य बौद्ध मठों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रमुखता से बजाया जाता हैं। दमन, दाओ और सुना वाद्य स्पीति की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं और वहाँ के लोकजीवन, पर्व-त्योहारों तथा धार्मिक अनुष्ठानों में विशेष महत्व रखते हैं।

दमन वाद्य: दमन लोक वाद्य स्पीति जनपद का पारंपरिक लोक वाद्य है। इस लोक वाद्य का वादन प्रत्येक उत्सव' मंगल कार्यों, संस्कारों आदि पर किया जाता है। दमन का वादन केवल बेदा एंव बेता जनजाति के लोगों के द्वारा ही किया जाता है। इस लोक वाद्य को बेदा जनजाति के लोगों द्वारा स्वयं बनाया जाता है। दमन लोक वाद्य को बनाने के लिए यॉक की खाल का प्रयोग किया जाता है। इस लोक वाद्य का बाहरी भाग तांबे का बनाया जाता है। दमन वाद्य के दो भाग दायां और बायां एक ही आकर के गोलनुमा बने होते है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

दमन वाद्य की वादन विधि: स्पीति के पारंपरिक लोक वाद्य दमन का वादन नगारा लोक वाद्य की ही भांति किया जाता है। दमन वाद्य के दोनों भागों को ज़मीन पर रख कर दो डंडियों के आघात से वादन किया जाता है। इस वाद्य के एक भाग को मोटी आवाज़ तथा दूसरे भाग को पतली आवाज़ में मिलाया जाता है।

दाओ वाद्य: दाओ लोक वाद्य स्पीति की सभी जनजातियों में अत्याधिक लोकप्रिय है। इस वाद्य का वादन महिला एवं पुरुष दोनों के द्वारा किया जाता है। बेदा जनजाति के लोग प्रत्येक उत्सव में इसका वादन लोक गीतों और मंगल वादन के साथ करते है। दाओ लोक वाद्य पारंपरिक है। दाओ लोक वाद्य को बेता' बेदा समुदाय के लोगों द्वारा स्वयं तैयार किया जाता है। यह लोक वाद्य खंजरी लोक वाद्य के समान बड़े आकर का वाद्य है। इस लोक वाद्य को बकरे की खाल से मड़ कर बनाया जाता है। दाओ लोक वाद्य में छन-छन के लिए लोहे के गोलाकार सिक्के भी लगाए जाते है।

दाओ लोक वाद्य की वादन विधि: इस वाद्य का वादन अत्यंत सरल है। दाओ लोक वाद्य का वादन खंजरी लोक वाद्य की भांति ही किया जाता है। इस पारंपरिक लोक वाद्य को एक हाथ में पकड़कर दूसरे हाथ से इस पर लगी खाल पर आघात करके बजाया जाता है।

सुना वाद्य: सुना लोक वाद्य सुषिर वाद्य की श्रेणी का लोकप्रिय वाद्य है। सुना वाद्य का वादन प्रत्येक उत्सव पर पारंपरिक लोक गीतों के साथ किया जाता है। इस लोक वाद्य का बेदा जनजाति में विशेष महत्व है। स्पिति में सुना वादकों को बेदा कहा जाता है। सुना लोक वाद्य चीपु शिंगा और पीतल का बना होता है। इस लोक वाद्य में सात छिद्र बने होते है कई सुना लोक वाद्य चांदी के भी बनाए जाते है। यह लोक वाद्य बेदा जनजाति के अतिरिक्त पुरे स्पिति में लोकप्रिय है।

सुना लोक वाद्य की वादन विधि: सुना लोक वाद्य को दोनों हाथों की उंगलियों से बजाया जाता है। इस वाद्य को गायक के स्वर में मिलाकर बजाया जाता है। लोक वाद्य सुना को दोनों हाथों के अंगूठों व उंगलियों के सहारे पकड़ा जाता है और मुंह से फूंक लगा कर दोनों हाथों की उंगलियों से बजाया जाता है।

लोकवाद्यों का सांगीतिक महत्त्व

जनजातिय क्षेत्र स्पीति के पारंपरिक लोकवाद्य वहाँ की लोकसंगीत की आत्मा हैं। स्पीति घाटी के लोकवाद्यों के बिना न तो लोकगीतों की पूर्णता संभव है और न ही लोकनृत्यों की जीवंतता। दमन, दाओ, सुना आदि वाद्य अपने विशिष्ट स्वर, ताल और ध्वनि के माध्यम से सांगीतिक वातावरण की रचना करते हैं, जो वहां के जनजातिय पर्वों, धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक आयोजनों को भावनात्मक गहराई प्रदान करते हैं। बौद्ध अनुष्ठानों में दमन, दाओ, सुना आदि वाद्य का वादन किया जाता है। लोकवाद्यों की ध्वनि के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति, कथा-वाचन तथा सामूहिक चेतना का संचार होता है। इन वाद्यों की संगीतात्मक शैली मौखिक परंपरा पर आधारित होती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी स्मृति और अभ्यास के माध्यम से संप्रेषित होती आई है। इस प्रकार स्पीति के पारंपरिक लोकवाद्य न केवल संगीत का माध्यम हैं, बल्कि वे वहाँ के जनजीवन के संगीतात्मक अनुभव का आधार स्तंभ भी हैं।

लोकवाद्यों के संरक्षण की आवश्यकता

स्पीति जनपद के लोकवाद्य वहाँ की सांस्कृतिक पहचान, परंपरा और जीवनशैली के प्रतीक हैं, किंतु आधुनिकता के प्रभाव, जनजातीय युवाओं में बदलती रुचियों तथा बाहरी सांस्कृतिक प्रभावों के कारण ये लोकवाद्य धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। आज इन वाद्यों का निर्माण करने वाले कारीगरों की संख्या घटती जा रही है, और नई पीढ़ी इन वाद्यों के वादन तथा महत्व से अपरिचित होती जा रही है। स्पीति में संगीत का कार्य एंव वाद्य निर्माण करने वाले कारीगरों की संख्या तीन' चार ही रह गई है। ऐसी स्थिति में इन पारंपरिक लोकवाद्यों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। इनके संरक्षण से सांगीतिक परंपराओं को जीवित रखा जा सकता है। इसके लिए शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक संगठनों और सरकारी प्रयासों के माध्यम से इन वाद्यों के निर्माण, प्रशिक्षण और प्रदर्शन को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस धरोहर को जान सकें और गर्व से उसका हिस्सा बन सकें।

निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेष के स्पीति क्षेत्र के पारंपरिक लोकवाद्य केवल संगीत के साधन मात्र नहीं हैं, बल्कि ये वहाँ की जनजातीय लोक संस्कृति, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक संरचना के जीवंत प्रतीक हैं। इन वाद्यों की ध्वनि में न केवल सुर और ताल है, बल्कि ये पारंपरिक वाद्य आध्यात्मिक चेतना, प्राकृतिक जीवन शैली और सामूहिक परंपराओं का प्रतिबिंब है। चाहे वह दमन वाद्य की गूंज हो या सुना वाद्य की मधुर स्वर-लहरियाँ, ये

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

वाद्ययंत्र स्पीति के जनजीवन में एक महत्वपुर्ण स्थान रखते हैं। स्पीति जनपद का जनजातिय लोक संगीत एंव लोकवाद्य आज भी अपने वास्तविक रूप में जनजातिय समाज में विद्यमान है। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि स्पीति जनपद के पारंपरिक लोकवाद्य धार्मिक अनुष्ठानों, लोक नृत्यों, समारोहों और सामूहिक उत्सवों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन यह भी स्पष्ट होता है' कि स्पीति जनपद के लोकवाद्य सभी जनजातियों के एक समान है। इन वाद्यों का वादन सम्पुर्ण स्पीति केवल बेदा' बेता जनजाति के लोगों के द्वारा ही किया जाता है। बेदा' बेता जनजाति को संगीत विरासत के रूप में पुर्वजों से प्राप्त हुआ है। हालाँकि, आधुनिकरण एंव तकनीकी विकास के प्रभाव के कारण इन पारंपरिक वाद्ययंत्रों का प्रयोग धीरे-धीरे सीमित होता जा रहा है। आज की युवा पीढ़ी में इन वाद्यों के प्रति रुचि की कमी, पारंपरिक वाद्य निर्माताओं का अभाव, और सांस्कृतिक गतिविधियों का कम होते जाना एक गंभीर चिंता का विषय है। अतः इन लोकवाद्यों के संरक्षण, पुनर्जीवन और प्रोत्साहन हेतु सरकारी, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों को मिलकर कार्य करना होगा। अंततः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्पीति के पारंपरिक लोकवाद्य लोक-संगीत की विरासत, आध्यात्मिकता का माध्यम, और सांस्कृतिक अस्मिता के संवाहक हैं।

संदर्भ सूची

1. दिमदूल' साक्षात्कार' डैमूल।
2. छेरिंग दोरजे' साक्षात्कार' किब्बर।
3. रिगझिन नमज्ञल' साक्षात्कार' काजा।
4. छेरिंग तनडुप' साक्षात्कार' पिन वैली।
5. दोरजे छेरिंग' साक्षात्कार' कीह।
6. तेनजिन' साक्षात्कार' कीह।
7. लामा तेनजिन नोबरू' साक्षात्कार' स्पीति।